गांधी आश्रम : उद्देश्य एवं प्रयोग

-डॉ. मुन्ना लाल गुप्ता

'गांधीजी के प्रयोग में सारे जगत को दिलचस्पी है और उसका महत्त्व युगों तक कायम रहेगा। इसका कारण यह है कि उन्होंने समूह को लेकर या राष्ट्रीय पैमाने पर उसका प्रयोग करने की कोशिश की है।'—जिराल्ड हर्ड, 'हिंद स्वराज'

औपनिवेशिक काल में अनुबंधित श्रमिकों और अन्य रूपों में भारतीयों को विदेश ले जाया गया। विदेश पंहुचे इन भारतीयों के सामने कई प्रकार की समस्याएं थीं जैसे : ख़राब सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पहचान का संकट, मनोवृत्तियों का पतन, नस्लभेद के शिकार और कई प्रकार के शोषण साथ ही भारत में कई प्रकार की सामाजिक सांस्कृतिक विद्रूपताओं के समाधान के लिए महात्मा गांधी ने अपने आश्रम में कई प्रयोग किए और तत्कालीन समाज का आत्मबल बढ़ाकर और उन्हें मार्गदर्शन देकर उन्हें स्वाधीनता संग्राम के लिए तैयार किया। इसलिए महात्मा गांधी द्वारा स्थापित आश्रमों के उद्देश्य और प्रयोग को गहराई से समझना आज और प्रासंगिक हो गया है। भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास को पढ़ते हुए सामान्यत: महात्मा गांधी के नेतृत्व में तथा उनसे इत्तर चलने वाले क्रांतियों का ही अध्ययन करने की ही परिपाटी अब तक रही है। परन्तु गांधी, सत्याग्रह के लिए राजनैतिक नेतृत्व के साथ-साथ सामुदायिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन के उत्थान के लिए प्रयोग अपने विभिन्न आश्रमों (यथा: फीनिक्स-1904, टॉलस्टॉय-1910, कोचरब-1915, साबरमती-1917 और अंतिम आश्रम सेवाग्राम-जून 1936) में आश्रम वासियों के साथ रहकर सामुदायिक रूप से कर रहे थे। इन आश्रमों में समाज, शिक्षा, धर्म, अध्यात्म, सर्वधर्म सम्भाव, निर्भयता, अस्वाद, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि से संबंधित प्रयोग हो रहे थे। इन प्रयोगों के द्वारा जहां एक ओर तत्कालीन राजनैतिक स्वाधीनता संग्राम के लिए प्रशिक्षित स्वयं सेवक तैयार हुए तो दूसरी ओर, यहां की रचनात्मक प्रवृत्तियों के 'मॉडल' ने पूरे देश में 'पूर्ण स्वराज्य' पाने के लिए चलाये जाने वाले अहिंसक आंदोलन और सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा के लिए जमीन तैयार की।

गांधी का मानना था कि आश्रम रूपी प्रयोगशाला के प्रयोगों को समाज में ले जाये बिना उसका क्या लाभ? इन प्रयोगों के निष्कर्ष को समाज में ले जाने के पूर्व इन प्रयोगों को आश्रम में पूर्णता दी जानी चाहिए और जैसे-जैसे वे इस योग्य बने वैसे-वैसे समाज में उन्हें लागू किया जाय और रचनात्मक संस्थाओं द्वारा लोगों में प्रवेश कराया जाय। इसके लिए भी रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का आश्रम के साथ संबंध संपर्क की घनिष्टता अनिवार्य हो जाती है।

स्वाधीनता संग्राम में गांधी युग भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। गांधी सिर्फ सत्य, अहिंसा को हथियार बनाकर उस समय के सबसे शक्तिशाली ब्रिटानी हुकूमत से राजनैतिक स्वतंत्रता की लड़ाई नहीं लड़ रहे थे; बल्कि भारत की जनता जिन कारणों से तथा जिस सभ्यता के प्रभाव में पड़कर अकमर्ण्य और कमजोर हुई तथा जिसके कारण भारत गुलाम हुआ, उससे मुक्ति के उपाय भी तरह-तरह के आश्रमी प्रयोगों द्वारा कर रहे थे। गांधी, एक साथ राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रयोगकर्ता थे। इस कारण गांधी जी ने अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए स्वतंत्रता की लड़ाई तथा स्वतंत्रता के बाद भारत में समाज व्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, शैक्षणिक व्यवस्था कैसी होनी चाहिए; आदि प्रश्नों पर विचार किया ताकि भारत की जनता को राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ 'पूर्ण स्वराज्य' भी मिल सके। इसके लिए वे अपने आश्रमों में धार्मिक सामुदायिक जीवन से संबंधित तरह-तरह के प्रयोग कर रहे थे तथा इन प्रयोगों के निष्कर्ष को पूरे देश में मॉडल के रूप में लागू करना चाहते थे; ताकि यह उनका 'आश्रमी मॉडल' हिंदुस्तान में आध्यात्मिक स्वराज्य की स्थापना में मार्गदर्शक बन सके। गांधी स्वयं 'हिंद स्वराज' की प्रस्तावना में कहते हैं ''व्यक्तिश: उनका सारा प्रयत्न 'हिंद स्वराज' में बताये हुए अध्यात्मिक स्वराज्य की स्थापना करने के लिए ही है।'' (गांधीजी, 1949:08) जहां संत रहते हैं वहां आश्रम होता ही है, ऐसी बात नहीं। संत तो पर्वत की गुफाओं में, एकान्त कुटिया में और खुले जंगलों में भी रहते हैं। लेकिन जहां पर संत के साथ कुछ साधक भी रहते हैं, उसे आश्रम कहते हैं। उसके कुछ नियम और उद्देश्य भी होते हैं। ऐसा ही आश्रम गांधी का था। गांधी के शब्दों में आश्रम का अर्थ सामुदायिक धार्मिक जीवन है। गांधी का आश्रम जीवन के कल्पना की एक युग प्रवृत्ति है। जब तक मूल कल्पना सिद्ध नहीं होती। तब तक वैसे युग प्रवृत्ति का विस्तार बढ़ता ही जाता है। गांधी का मानना था कि विशाल जीवन व्यापी एक सार्वभौम कल्पना के पूरे होने में एक कल्प लग जाय, तो इसमें कोई अनोखी बात नहीं। महात्मा गांधी द्वारा प्रथम आश्रम की स्थापना, 1904 में दक्षिण अफ्रीका के डरबन के समीप फीनीक्स नाम से तब हुई जब गांधी के विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। इसे गांधी के शब्दों में ही देखा जा सकता है :

''मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अंदर गहराई में दबी पड़ी थी, रस्किन की पुस्तक (अन्टु दिस लास्ट) में मैंने उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा और इस कारण उसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया और मुझसे उसमें दिये गये विचारों पर अमल कराया। जो मनुष्य हममें सोई हुई उत्तम भावनाओं को जागृत करने की शक्ति रखता है, वह कवि है। सब कवियों के अन्दर सारी सद्भावनायें समान मात्रा में नहीं होती।'' (गांधी एम. के., 1957:271) इसी विचार से प्रेरित होकर गांधी ने गुजराती में 'सर्वोदय' नामक पुस्तिका लिखी और इसी सर्वोदय के विचार को अमल में लाने के लिए दक्षिण अफ्रीका में पहला फीनिक्स (1904) और दूसरा आश्रम टॉलस्टॉय (1910) में स्थापित किया। साप्ताहिक 'इंडियन ओपिनियन' का प्रकाशन (1904) भी फीनिक्स फार्म आश्रम से ही होता था। दक्षिण अफ्रीका में गांधी द्वारा चलाये गए सत्याग्रह आंदोलन के लिए टॉलस्टॉय फार्म के महत्त्व को गांधी के शब्दों में ही समझा जा सकता है : ''सत्याग्रह के अंतिम युद्ध के लिए टॉलस्टॉय फार्म आध्यात्मिक शुद्धि का और तपश्चर्या का स्थान सिद्ध हुआ। यदि ऐसा स्थान प्राप्त न होता या प्राप्त न किया गया होता, तो आठ वर्ष तक सत्याग्रह की लड़ाई चल सकी होती या नहीं, अधिक पैसा मिल सका होता या नहीं और अंत में जिन हजारों हिन्दुस्तानियों ने कौम की लड़ाई में भाग लिया उन्होंने भाग लिया होता या नहीं, इस विषय में मुझे पूरी शंका है।'' (गांधीजी, 1968:293)

आश्रम के बारे में गांधी द्वारा लिखित 'सत्याग्रह आश्रम का इतिहास' में वर्णित है कि आश्रम का अर्थ सामुदायिक धार्मिक जीवन से है। गांधी द्वारा सौ बीघा जमीन लेकर आश्रम बसाया गया। इस संस्था को उस समय तक भीतर या बाहर आश्रम के रूप में पहचाना नहीं गया। धर्म इसका अंग जरूर था लेकिन मूल मकसद भीतरी और बाहरी सफाई और आर्थिक बराबरी हासिल करना था। (गांधी वांग्मय, खण्ड-15: 94) गांधी ने अपने आश्रम को सत्य, प्रेम, अहिंसा जैसे एकादश व्रतों की बुनियाद पर खड़ा किया था। जिनका वे सामुदायिक सामाजिक जीवन में प्रयोग भी करते रहे। इन प्रयोगों के दौरान होने वाली कठिनाई को दूसरे प्रयोग द्वारा दूर करने की कोशिश भी करते रहे। ताकि इन प्रयोगों का जो निष्कर्ष निकले वह बहुभाषिक, बहुधार्मिक विवधताओं से भरे भारत के लिए मॉडल बन सके। गांधी कहते हैं, 'हिंदुस्तान अगर प्रेम के सिद्धांत को अपने धर्म के एक सक्रिय अंश के रूप में स्वीकार करे और उसे राजनीति में शामिल करें तो स्वराज्य स्वर्ग से हिंदुस्तान की धरती पर उतरेगा।' (गांधीजी, 1949: 27)

गांधी द्वारा स्थापित आश्रमों की स्थापना के मुख्य तौर पर दो उद्देश्य हो सकते हैं। वे हैं -

1. तात्कालिक उद्देश्य
2. दीर्घकालिक उद्देश्य

आश्रम स्थापना का तात्कालिक उद्देश्य था, स्वाधीनता संग्राम के लिए समर्पित, प्रशिक्षित स्वयं सेवक तैयार करना जो सत्याग्रह की लड़ाई के दौरान पूरी निष्ठा से गांधीवादी तरीकों पर अमल करते हुए आगे बढ़े। असहयोग आंदोलन (1920-1922) के दौरान सत्याग्रहियों द्वारा हिंसक चौरी-चौरा की घटना ने सत्याग्रहियों के लिए प्रशिक्षण की जरूरत को आवश्यक बनाया। 1930 का 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' तथा 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' की सफलता गांधी के द्वारा आश्रम के माध्यम से तैयार प्रशिक्षित सत्याग्रहियों का हुजूम गांधी आश्रम की स्थापना के औचित्य को पूर्णत: सिद्ध करता है। इतिहासकार बिपिन चन्द्र लिखते हैं कि गांधी ने अपने 78 प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को साथ लेकर (सिविल नाफरमानी/नमक आंदोलन/दांडी मार्च) अहिंसक आंदोलन का श्री गणेश किया। 'यह ऐसा आंदोलन था जो राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में आम जनता की भागीदारी की दृष्टि से बेमिसाल था। इस कथन से यह सिद्ध होता है कि स्वाधीनता आंदोलन के दौरान गांधी आश्रम तथा उनके आश्रमी प्रशिक्षण और प्रयोग की कितनी भूमिका थी। गांधी आंदोलन की रणनीति 'संघर्ष-सतत- संघर्ष' के विपरित 'संघर्ष-विराम-संघर्ष' की थी। उनका मानना था कि कोई भी आंदोलन लगातार लंबे समय तक नहीं चल सकता तथा उसकी उर्जा भी निश्चित होती है। (चंद, बिपिन : 212, 250) खासकर तब जब सत्याग्रह जैसा आंदोलन हो तो यह बात और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है। इस विराम काल में गांधी देश की जनता को रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से उर्जा संचित करने का काल बताते थे। इस काल में रचनात्मक कार्यों का प्रयोग गांधी आश्रम में होता था। इन प्रयोगों का निष्कर्ष पूरे देश के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बनता था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान यह भी एक महत्वपूर्ण भूमिका गांधी आश्रम की थी।

गांधी द्वारा स्थापित आश्रमों का दीर्घकालिक उद्देश्य था, यहां के सामुदायिक धार्मिक-सामाजिक जीवन पद्धति के प्रयोग। गांधी मानते थे कि हिंदुस्तान का पतन पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में हुआ है। भारत की प्राचीन परंपरा आश्रम की रही है। यहां पहले मुनि तपस्या करते थे तथा समाज इन मुनियों से अध्यात्मिक नैतिक जीवन की सिख लेता था। गांधी आश्रम में अध्यात्मिक जीवन जीने के लिए

सामूहिक स्तर पर तरह-तरह के प्रयोग कर रहे थे। देश की राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद गांधी, आश्रमों के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को पूरे देश में मॉडल के रूप में लागू करना चाहते थे। गांधी का मानना था कि इस तरह की जीवन पद्धति को अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वराज्य पा सकेगा।

धार्मिक लोगों का मानना था कि व्यक्तिगत मनोवृत्ति बदल कर समाज की मनोवृत्ति को बदला जा सकेगा पर उन्होंने सामाजिक परिस्थिति का व्यक्ति पर कितना प्रभाव पड़ता है, इस पर ध्यान नहीं दिया। नतीजा यह हुआ कि केवल कुछ लोग ही धार्मिक वृत्ति अनुसार अपना जीवन साध सके। सामान्य समाज, व्याप्त परिस्थितियों के कारण यथावत् रहा। इन सबके विपरीत समाज परिवर्तन के लिए आतुर आंदोलनों में केवल परिस्थिति-परिवर्तन को ही महत्वपूर्ण माना और समझा गया क्योंकि व्यक्ति परिस्थितियों का गुलाम है, परिस्थिति अनुकूल होने पर वह आजाद हो जायेगा। दुर्भाग्य से यह बात भी नहीं बनी, क्योंकि परिस्थिति बदलने पर भी लोगों की मनोवृत्ति यथावत् रही। उन्हें शोषणमुक्ति की राह नहीं मिली और शासन को कठोरता से लोगों को नयी परिस्थिति के अनुसार बदलने के लिए मजबूर करना पड़ा। गांधी से पहले के नेताओं ने समाज सुधारकों से कहा कि परिस्थिति बदलने का कार्य पूर्ण करने पर मनोवृत्ति बदलेगी अथवा व्यक्तिगत मनोवृत्ति परिवर्तन करने से सामाजिक परिस्थिति बदलेगी, ये दोनों मान्यताएं अवैज्ञानिक हैं। गांधी ने कहा मनोवृत्ति और परिस्थिति दोनों साथ-साथ बदलनी चाहिए। अर्थात् परिस्थिति बदलने की पद्धति ऐसी हो कि मनोवृत्ति का सही विकास हो और मनोवृत्ति संशोधन का रास्ता ऐसा हो जिससे सामाजिक परिस्थिति बदलने में सहायता मिले।

इस कार्य में पहले तरीके (मनोवृत्ति परिवर्तन) के लिए रचनात्मक कार्यक्रमों एवं संस्थाओं की रूप रेखा में परिवर्तन इस प्रकार लाया जाए कि वह लोगों की मनोवृत्ति को भी उनके अनुकूल बनाये। रचनात्मक कार्य तो समाज सेवा का कार्य करते है पर उसका नतीजा अंततः समाज-परिवर्तन का होता है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा की मनोवृत्ति का विकास करके सामाजिक न्याय और शोषणमुक्त अहिंसक क्रांति लायी जा सकती है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण हैं-स्त्रियों और बच्चों की सेवा का कार्यक्रम कस्तूरबा ट्रस्ट को देना परंतु उसके पीछे भूमिका थी स्त्रियों की, स्त्रियों और पुरुषों के बीच अभेद वृत्ति पैदा कर सामाजिक न्याय लाने की, हरिजन सेवा द्वारा जाति मुक्त समाज बनाने की, ट्रस्टीशीप के द्वारा पुंजीपतियों तथा साधन सम्पन्न लोगों को सेवान्मुख करने की, खादी-ग्रामोद्योग द्वारा प्रकृति, पर्यावरण और समाज का शोषण जो उत्पादन की सामान्य पद्धतियों में होता है, उसको मिटा कर प्रत्येक को अपने-अपने स्वराज्य/स्वाधीनता को पाने के लिए सत्य, अहिंसा, प्रेम आधारित एक अहिंसक क्रांतिकारी रास्ता सुझाने की। साथ-साथ इन कार्यों में लगे लोग यद्यपि बाह्य प्रवृति में लगे रहते परन्तु इन कार्यों के द्वारा उनकी अंतर मनोवृत्ति भी संशोधित होती रहती है। इससे लोग भोग से त्याग की ओर, स्वार्थ से निःस्वार्थता की ओर, भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख होते जाते हैं।

गांधी आश्रमों में कार्यकर्ता अपनी मनोवृत्ति संशोधन की साधना इस प्रकार करते थे कि उस साधना में समाज की सेवा और परिस्थिति परिवर्तन की कुंजी छिपी रहती थी। इन आश्रमों को 'सामाजिक प्रयोगों की स्थली' भी कहा जा सकता था। अर्थात् व्यक्ति की मनोवृत्ति और सामाजिक समस्याएं का संशोधन इन आश्रमों में होता था और इससे उत्पन्न शक्ति, समाज और रचनात्मक संस्थाओं को प्राप्त होती थी। इन आश्रमों में समाज की बृहत् समस्याओं के मौलिक और आध्यात्मिक हल को निकालने का कार्य वहां के साधकों के द्वारा होता था।

जब गांधी ने देखा कि रचनात्मक संस्थाओं में लगे लोग प्रवृत्ति में अधिक आसक्त हो गये हैं, तो उनकी मनोवृत्ति संशोधित करने के लिए उन्होंने पूर्णत: स्थापित आश्रम (साबरमती आश्रम) को विसर्जित कर दिया और देश के उस भाग में आश्रम खोलने की प्रस्तावना रखी जो सचमुच ही सेवा, रचनात्मक कार्य और पूर्णरूपेण स्वाधीनता की आवश्यकता महसूस करता था। अंतिम आश्रम (सेवाग्राम आश्रम-1936, इस आश्रम में भारत छोड़ो आंदोलन, 1942 से संबंधित कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई) की स्थापना भी इसी उद्देश्य को पाने की फलश्रुति थी। इस आश्रम के लिए गांधी के महाराष्ट्र के छोटे से गांव 'सेगांव' में आ बसने के अपने उद्देश्य के बारे में पूछे जाने पर कहते हैं ''मेरे 'सेगांव' में आ बसने का तत्कालिक उद्देश्य तो यह है कि मैं अपने सामर्थ्य-भर भारतीय गांवों में व्याप्त भयंकर अज्ञान तथा दरिद्रता और उससे भी भयंकर बाहरी गंदगी को दूर कर सकूं। सच तो यह है कि ये तीनों बुराइयां एक दूसरे से जुड़ी है। हम गांवों में फैले इस अज्ञान को मुंह से अक्षर-ज्ञान कराकर नहीं बल्कि लोगों के समक्ष सफाई का पदार्थ पाठ प्रस्तुत करके, उन्हें दुनिया में क्या कुछ हो रहा है, इसकी जानकारी देकर और इसी तरह के दूसरे उपायों से दूर करना चाहते हैं।''

''मैं गांवों का उद्योगीकरण नहीं करना चाहता। मैं तो प्राचीन पद्धति से उनका नव-संस्कार करना चाहता हूं। अर्थात् गांवों में हाथ-कताई, हाथ-पिंजाई और अन्य महत्वपूर्ण दस्तकारियों का फिर से चलन करवाना चाहता हूं। ग्रामोद्धार आंदोलन कताई-आंदोलन से ही फूटकर निकली एक शाखा है। सन् 1909 में इस विषय में मैं इतना अज्ञानी था कि उस समय लिखी हुई अपनी छोटी-सी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में मुझे जहां 'चरखा' लिखना चाहिए था वहां मैंने 'करधा' लिख दिया था।'' (गांधी वांग्मय, खण्ड-64:45।)

गांधी आश्रमों से अपेक्षा यह थी कि इन आश्रमों में रचनात्मक कार्यकर्ता समय-समय पर आ कर अपनी ऊर्जा संचित करेंगे और सत्याग्रह आंदोलन से संबंधित अपने दिशासूचक यंत्र की दिशा ठीक करेंगे तथा इन आश्रमों में भविष्य के समाज की दृष्टि से जो प्रयोग साधकों द्वारा किये जायेंगे उन प्रयोग-सिद्ध शोधों को सामाजिक स्वरूप देने का काम रचनात्मक संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा किया जाएगा। यह प्रक्रिया आज तो उससे भी अधिक आवश्यक हो गयी है, जितनी पहले थी।

गांधी के अनुसार, आश्रम और संस्थाएं (रचनात्मक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक) परस्पर पूरक हैं, जैसे मनोवृत्ति प्रधान और प्रवृत्ति प्रधान गुणों का समन्वय। आश्रम का महत्व संस्थाओं से एक प्रकार से अधिक है। संस्थाएं अपना कार्य क्षेत्र बदल सकती हैं। वे बनती हैं और समाप्त भी हो सकती हैं-सेवा के लिए जब जहां उनकी आवश्यकता हो, वे वहां जाती हैं पर आश्रमों का गठन दूसरी भूमिका से होता है। इन आश्रमों में साधक-साधिकाएं जो शोध कार्य करते हैं सामाजिक महत्व के जिससे इस आज की समस्याएं यथा : हिंसा, कटुता, किसानी आत्महत्या, राजनैतिक भ्रष्टाचार, समाज के नैतिक मूल्यों का पतन आदि; की समस्याओं का समाधान अहिंसक समाज रचना की दृष्टि से हो सकता है।

गांधी का मानना था कि आश्रम रूपी प्रयोगशाला के प्रयोगों को समाज में ले जाये बिना उसका क्या लाभ? इन प्रयोगों के निष्कर्ष को समाज में ले जाने के पूर्व इन प्रयोगों को आश्रम में पूर्णता दी जानी चाहिए और जैसे-जैसे वे इस योग्य बने वैसे-वैसे समाज में उन्हे लागू किया जाए और रचनात्मक संस्थाओं द्वारा लोगों में प्रवेश कराया जाय। इसके लिए भी रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का आश्रम के साथ संबंध संपर्क की घनिष्टता अनिवार्य हो जाती है।

इस प्रकार, राष्ट्र जीवन में आश्रमों की उपयुक्ता एक ओर व्यक्ति की मनोवृत्ति संशोधन के लिए तथा दूसरी ओर समाज की व्यवस्था में अहिंसक-शोध के लिए आश्रम का सामूहिक जीवन एक प्रयोगशाला का स्वरूप उपस्थित करता है।

गांधी का पूरा 'सर्वोदय चिंतन' समाज को अहिंसक रूप देने का है। (सर्वोदय, 1955) यह एक ऐसी सामूहिक साधना थी जिसके बीज आश्रम व्यवस्था में ही मिल सकते थे। जहां आदर्श के प्रति निष्ठा रखने वाले लोग उस साधना में लगे रह सकते थे, जिससे पूर्ण व्यक्ति स्वातंत्र्य का पौधा नैतिक-आध्यात्मिक भूमि पर खड़ा हो और समाज-विकास की रोशनी अंतिम व्यक्ति के 'पूर्ण स्वराज्य' तक पहुंचे।

गांधी के द्वारा आश्रम व्यवस्था का प्रयोग हिंदुस्तान में पनप रही सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान देने के लिए एक प्रयास था, यह एक प्रयोग था ताकि हिंदुस्तान की जनता पराधीनता की राजनैतिक बेड़ियों से अपने को अहिंसक आंदोलन के जरिए मुक्त कर सके। साथ ही आश्रम के प्रयोग से प्राप्त निष्कर्ष को पूरे देश की जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके ताकि हिंदुस्तानी जनता गुलामी मानसिकता से निकलकर 'पूर्ण स्वराज्य' को पा सके और 'अहिंसक समाज रचना' कर सके। पश्चिमी विचारक डार्विन के अनुसार सर्वश्रेष्ठ की उत्तरजीविता से प्रेरित आधुनिकीकरण, धुर राष्ट्रवाद और सार्व भौमिकता के विचार, गलाकाट प्रतियोगिता, वृहद उद्योगजनित पूंजीवाद और उपभोक्तावाद के बरक्स गांधी ने अपने आश्रम के माध्यम से ग्रामीण जीवन के स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता के लिए हस्तकारी, पिंजाई, रचनात्मक कार्यक्रम आदि के द्वारा भारतीय समस्याओं का समाधान और भारतीय राष्ट्रवाद की तस्वीर गढ़ने की कोशिश की। साथ ही घोर भौतिकता और उपभोगतावाद पर आधारित तत्कालीन पश्चिमी आधुनिक सभ्यता दृष्टि के समक्ष महात्मा गांधी ने आध्यात्मिक और संयम पर आधारित हस्तकरघा, कुटीर और स्वदेशी से प्रेरित वैकल्पित सभ्यता दृष्टि को प्रस्तावित किया। महात्मा गांधी की इन विचारों के प्रयोग स्थली बने गांधी आश्रम और आश्रमी प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों को स्वरचित पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों एवं भाषणों के माध्यम से समाज तक प्रचारित प्रसारित किया।

संदर्भ सूची :

1. गांधीजी, (1949). हिंद स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ-8, गांधीजी, 1955, सर्वोदय, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
2. गांधी, एम. के. (1957). सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृ-271।
3. गांधीजी, (1968). दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, पृष्ठ 293।
4. सत्याग्रह आश्रम का इतिहास, गांधी वांग्मय, खण्ड-15, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली, पृष्ठ-54।
5. गांधीजी, (1949). हिंद स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ-27।
6. चंद्र बिपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, पृष्ठ-212.
7. उपरोक्त, पृष्ठ 250.
8. गांधी वांग्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली, खण्ड-64, पृष्ठ- 45।
9. सर्वोदय, 1955।

सहायक प्रोफेसर, प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा (महाराष्ट्र) भारत, मोबाइल : +91 9028226561 ई-मेल : mlgbharat@gmail.com